Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.1[illegible]

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
November 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

Index

1. Digital Banking :An Overview — 5
Dr Madhukar P Aghav
2. Financial Markets : Evaluating Averages and Indicators — 13
Dr Sachin Nagnath Hadoltikar
Memon Sohel Mohd Yusuf
3. Human Resource Management (Hrm) :An Overview — 19
Dr. Kathar Ganesh. N.
4. Impact of Mergers & Acquisition on Private Sector Banks In Global Economy — 26
Dr. Nanaji Krishna Aher
5. Dramatic Stress: The Spirit of Play — 32
Sheema Farheen
Dr Farhat Durrani
6. Recent Trend InBanking — 41
Swapnil .Kalyan. Laghane, Dr Quazi Baseer Ahmed
7. Corporate Governance in Maharashtra Companies — 49
Dr. Rajesh Bhausaheb Lahane
8. Effective Digital Marketing Strategies & Approaches — 59
Dr Vikrant Uttamrao Panchal
9. Global Competitiveness of Indian Industries Strategy and Innovation — 70
Dr. Rajendra Ashokrao Udhan
10. Indian logistics Trade in Dynamic World Scenario — 79
Adnan Ali Zaidi, Dr Memon Ubed
11. Demonetization: Before And After Menkudle D.V — 95
Dr. Shahuraj S. Mule
12. Status and Occupational Prospects of Outcome SC and St research scholar of Hyderabad Karnataka Universities — 100
Dr. Shashikant Shankar Singe
13. लातूर जिल्ह्यातील मराठी महिन्यानुसार यात्रांचे वितरण : एक भौगोलिक अभ्यास — 106
प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर
14. मानवाधिकार और नारी शोषण — 109
डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड
15. नई बिसात : उपन्यास में दलित चित्रांकण — 112
डॉ. बालाजी कोनाळे
16. उत्तरशती की हिंदी कहानियों मे नारी शोषण — 115
प्रा.इंगळे अमोल रमेश

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
November 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

उत्तरशती की हिंदी कहानियों मे नारी शोषण

प्रा.इंगळे अमोल रमेश
हिंदी विभागाध्यक्ष, शिवनेरी महाविदयालय,शिरुर अनंतपाळ, जि.लातूर

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृतीमें नारी का स्थान महत्वपूर्ण है।संसार में यदि नारी न होतीतो सभ्यता और संस्कृती हो न होती । लेकिन वही स्त्री युगों से शोषित और प्रताडित है । नारी जीवन का सामाजिक सत्य किसी से छिपा नहीं है। नारी के लिए सबसे पहले आचार संहिता 'मनु' ने लगायी । मनु ने नारी के लिए जो आदर्शन वाक्य अंकिता किया था वह "यत्र नार्यस्त पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात नारी को धर्मशास्त्रानुसार ही विदया की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी, पराकम साहस की देवी दुर्गा, अंबिका, सौंदर्य रति, पवित्रताकी गंगा के रुप पुजनीय रही है। जहॉ नारी की पूजा होती है, उसे सम्मान दिया जाता है वहॉ देवताओं की निवास होता है किंतु यह आदर्श वाक्य कभी यथार्थ नहीं बन सका। एक और उसे पुजनीय माना गया है तो दुसरी और उसके अस्तित्व को मानने से इंकार किया गया है । उसका अस्तित्व पुरुषों की गुलामी शोषण के लिए है । 'रामचरित मानस' में तुलसीदास ने स्त्री को, "ढोल गवार शुद्र पशुनारी सब ताडन के अधिकारी" माना है । तो आदय शंकराचार्य ने नारी की निंदा करते हुये उसे 'नरक का द्वार' घोषीत किया था । नारी नरक का द्वार कहकर काम संबंधी स्त्री पुरुष के अधिकार को अप्राकतिक वर्जनाओं के सहारे छोड दिया गया । अशिक्षा, वर्गभेद, जातियता, आर्थिक विपन्नता, कुरीतियॉ, अंधविश्वास और अनैतिक प्रतिबध्दता जो कालांतर में नारी उत्पीडन के कारणों मे स्थान पा गया । अर्थात सभी युगों मे पुरुषों द्वारा नारी के शोषण का ही परिचय होता है । नारी घर बाहर दोनो जगह शोषण, अपमान, संदेह और उत्पीडन का सामना करती नजर आती है । ऋग्वेद काल में कुछ अंशो में स्त्री पुरुष समानता का वर्णन मिलता है । भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री को कभी भी पुरुष की बरोबरी का अधिकर नही दिया गया । स्त्री को किसी न किसी रुढी, परंपरा के नाम पर चार दीवारों के अंदर कैद करने का कार्य किया गया है । सामाजिक दृष्टी से अबला समझाकर उस पर अन्याय, अत्याचार होते रहे है उसे स्त्री होने की सजा सुगतनी पडती है ।

विश्व की सभी संस्कृतियॉ पुरुष प्रधान संस्कृतियॉ रही है । इसीलिए विश्व की सांस्कृतिक व्यवस्था में स्त्री का स्थान दुसरे दर्जे का ही रहा है । सभी संस्कृतियॉ में नारी को एक जैविक वस्तु के रुप में देखा गया है । इसमे पुरुष के हितों का ध्यान में रखा गया है जाने अनजाने नारी पर अन्याय होता रहा है इसी अन्याय कारण अनेक शताब्दियो से नारी पीडीत, शोषित रही है । जब भी कभी व्यवस्था व्यक्ति का शोषण कर उसे गुलाम बनाने का प्रयत्न करती है । जब भी कभी व्यवस्था से मुक्ति के लिए संघर्ष प्रारंभ होता है । विश्व में नारी मुक्ति के संघर्ष का इतिहास भी उतना पुराना नहीं है जितना की नारी के शोषण का इतिहास राष्ट्र विकास के लिए नारी का मुक्त होना तथा शोषण से मुक्त होना आवश्यक है । नारी का यह मुक्ति आंदोलन सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा पुरुषी व्यवस्था के विरोध में आंदोलन है क्योंकि इसी व्यवस्थाने नारी को गुलाम बनाकर रखा है तथा नारी का शोषण किया गया है । पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था का शिकार बनी नारी प्रत्येक सुधार आंदोलन का आधार बनी क्योंकि हर व्यवस्था ने उसे बांधकर रखा था । आशारानी व्होरा के अनुसार "उसे विदेशी दासता, पुरुष समाज की दासता और सामाजिक रुढियों के विरुध्द एक साथ तीन–तीन मोर्चो पर लडना पडा इसीलिए उसके मुक्ति संघर्ष को सामाजिक और राजनीतिक स्तरों पर अलग–अलग करके नहीं एक साथ ही देखना होगा।" 1 (अंतिम दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी – डॉ.रामचंद्र माली, प.10)

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
November 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

विश्व के सभी देशों में नारी की स्थिति बदल रही है, लेकिन इन बदली हुयी स्थितीयों में उनका दमन एवं शोषण लगातार होता रहा है । इस संबंध में डॉ. प्रज्ञा शुक्ल लिखती है कि, "जगत का इतिहास इतस बात का साक्षी है कि, नारी के मुलभूत अधिकारों पर सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक प्रतिबंध विश्व की सभी सभ्यताओं में विदयमान था ।स्त्री हीनता की मान्यता केवल भारत में ही नहीं परंतु विकसित या अविकसित पूंजीवादी देशों में समाज जीवन की अतल गहराईयों तक फैल–चुकी है।" 2 (अंतिम दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी – डॉ.रामचंद्र माली, प.14.15)

सुमंगली– कावेरी

कावेराजी की 'सुमंगली' कहानी समाज में फैली उस विद्रुपता एवं स्त्री शोषण की कहानी है जिसमें स्त्री को उपभोग की वस्तु समझा गया है । सुगिया एक ऐसी कम उम्र की बालिका है जिसका इस भरी दुनिया में अपना कहनेवाला कोई नहीं है । सुगिया को आपना अतीत मालूम नहीं । किसने जन्म दिया, किसने पाला कुछ भी मालूम नहीं । सिर्फ मंगली कुति का आधा हिस्सा वह अपना कह सकती है । सुगिया अपनी मजदूरी का आधा हिस्सा मंगली को खिलाती और आधे से अपना गुजारा करती है । जो प्यार इसे मनुष्य नहीं दे पाया, वह प्यार इस मुक जानवर ने उसे दिया है । इसिलिए वह उससे बहन, मा, दादी का रिश्ता मानती है । उसका कारण भी ऐसा है एक रात भयावनी कालरात सुलाधार वर्षा और दिलदहनवाली कडकती बिजली चमक रही थी तो डर के मारे सुगिया की जान निकली जा रही थी । ऐसे में काली भयावनी रात में मंगली ने एक हमदर्द सहेली बनकर साथ दिया था तब से मंगली सुगिया की सबकुछ है ।

जबसे सुगिया ने होश संभाला था, जब आठ नौ साल की थी तसबे वह अपने आप को ठेकेदार की रखैल ही समझती थी । ठेकेदार के हवाले इसे किसने किया याद नहीं यह भी अन्य मजदूरों के साथ एक मजदूरीन बनकर बउी बडी बिल्डींगोपर काम करती थी । जैसे ही बनकर तैयार हो जाती इन्हे बेरहमी से बाहर निकाला जाता मजदूर केवल पेट के लिए पसीना बहाकर बडी बडी बिल्डिंगे खडी करते है । सुगिया जब बारह वर्ष कि थी तभी उसे और बना दिया गया 12 वर्ष के आयुमे ठेकदार की हवान का शिकार था । उस काल मनहुस रात को वह आज भी नही भूली सुगिया अपनी ही टोली के बि चबेखबर सोयी हुयी थी वह वहशी दरिंदा भूखा भेडिया ठेकेदार अपनी मन करके चला गया । बेचारी मजदूरन सुगिया उसके सामने चिल्लाती रही सुबकती रही, भगवान का वास्ता देती रही पर उसका फादा नहीं हुआ आखिर कार वह बेहोश हो गई बेहोशी जागी तो उसने देखा की एक बुढिया उसकी सेवा करते नजर आयी वह बुढिया उसी के साथ काम करनेवाली दुखना की मॉ थी दुखना कमी मॉ उसे सांत्वना देते हुए कहती है कि, "चुप रह बेटी ! चुप रह यह तो एक न एक दिन होना ही था पर तू बडी ही अभागिन है री । जो इस छोटी सी उम्र में ही सब कुछ झेलना पडा अब एकदम चुप हो वरना पिचास को यदि मालुम हो गया तो तेरी चमडी उधडकर रख देगा। हॉ, हम गरीबों का जन्म ही इसीलिए हुआ है । हमारी मेहनत से अटटलिकाऍ तैयार होती है और उसके पुरस्कार के बदले में हमारे शरीर का रौंद जाता है।"3 (द्रोणाचार्य एक नही, कावेरी,प.)

सुगिया के दवा दारु से ठिक किया जाता है । इसका सारा खर्च कमीना ठेकेदार ही उठाता है । लेकिन उस दिन से मजदूरन सुगिया पर अत्याचार का सिलसिला शुरु हो जाता है । ठेकेदार के खिलाफ आवाज उठाने का कोई साहस भी नहीं करता । अगर सुगिया काम छोडती या अत्याचार का विरोध करती तो उसे भूखे मरने की नौबत आ जाती । और इसी मजबुरी का फायदा उठाकर ठेकेदार सुगिया का शोषण करता है । ठेकेदार किसी भेडियों से कमी नही था । जिसने चौदह वर्ष की आयु में ही सुगिया को मॉ बना दिया था जब बच्चा पैदा हुआ तो ठेकेदार बदनामी के डर से मजदुर दुखना को डॉट डपट कर सुगिया के साथ उसकी शादी करा दी । सुगिया का दुख के साथ ग्रहस्थी चल रही थी की अचानक उसके सिर पर पहाड टूट पडा । दुखना चार तल्ले की बिल्डिंग से संतुलन खो जाने से पॉव फिसल कर गिर गया । तथा उसी में उसकी जान चली गयी। सुगिया के लिए तो चारों और अंधेरा अंधेरा था । दुखना मर गया लेकिन बच्चे का असली बाप ठेकेदार तो जिंदा था । फिर भी दुनिया की

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
November 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

नजरों में वह बिना का बच्चा था । सुगिया ने बच्चे का नाम सुखदेव रखा दुखना के सुगिया तथा बच्चे को खूब प्यार दिया था। मर्द आखिर मर्द ही होता है । दुखना के रहते ठेकदार ने सुगिया को कभी छुने की हिम्मत तक नही की। लेकीन दुखना मरने के बाद जब बच्चा सुखदेव जोर की बुखार से बिमार था । तो उसके पास पैसे नहीं थे सबसे पैसे मॉगकर थककर अंत में उसे खयाल आया पिशाच ठेकेदार का उसे लगा की जरुर कुछ मदद करेगा । ममता की मुर्ती मॉ उस भेडियें के अपना आंचाल पसारकर गिडगिडा उठी लेकीन ठेकेदार मूँह पर ताव देकर बोला, "आ पहले इधर आ मेरी बुलबुली"(द्रोणाचार्य एक नही, कावेरी,प.5) एक मॉ अपने बेटे के इलाज के लिए पैसे मांग रही है और ठेकेदार जो हवस का पुजारी उसके इज्जत के साथ खेलना चाहता है इसीलिए बिमार बच्चे को गोद में हटाकर सुगिया पर अत्याचार करता है । उसका शारीरिक शोषण करता है और सुगिया बेचारी गिडगिडाते हुऐ कहती है, "बाबु ऐसा जूल्म मत करो।" आखिर तुम्हारा ही बेटा है। पहले उसकी जान बचाओ। (द्रोणाचार्य एक नही, कावेरी,प.5) लेकिन उस हवस के पुजारीने मदद करना तो दूर की बात उल्टा उसे कहता है, "हू है मेरा बेटा ! छिनाल ! फिर कभी ऐसी बात मुँह से निकाली तो गला घोंट दुंगा, समझी तु सौ मर्द के पास रहकर मुझे बदनाम करती है खबरदार जो दुनिया की गन्दगी मेरे मुंह पर फेंकने की कोशिश की।"(द्रोणाचार्य एक नही, कावेरी,प.5) ठेकेदार मदद तो नही करता पर उस पर शारिरिक अत्याचार मात्र करता है । सुगिया वहॉ से अपने बच्चे को उठाकर कुडा फिंकवाने ठेकेदार के पास जाती है । पर वह भी उसकी जवानी को घूरता है। हर ठेकेदार का एक सा रुप नजर आता है । वहॉ से वह प्राइवेट डिसपेंसरी में जाकर डाक्टर के पैरों पर गिरकर बोलती है, "डाक्टर बाबु, भगवान के लिए इस मासूम को बचालो। आप जो भी किंमत चाहो मै देने को तैयार हूँ । जल्दी करो साहब, वरना मेरे बच्चे को कुछ हो जायेगा।"द्रोणाचार्य एक नही, कावेरी, प.6 लेकीन तब तक देर हो चुकी थी। बच्चा मर गया था। लेकिन सुगियाने अपने बच्चे को बचाने के लिए हर संभव कोशिश की थी । कोई मॉ अपने बच्चे को बचाने के लिए इससे बडी कुर्बानी भला और क्या कर सकती है ।

सुगिया बचपन से ही ठेकेदार के शारीरिक शोषण का शिकार बनी थी । दुखना काम करते समय पॉव फिसलकर गिरकर मर गया था । भरी जवानी में पहाड सी जिंदगी में कोई जीवन साथी नहीं था । न ही उसमें इतनी शक्ति नहीं थी किवह दुसरे मर्द को अपनाकर जी सके।

इस प्रकार इस कहानी में कावेरीजीने सुगिया के माध्यम से ठेकेदार कैसे मजदूरन का शोषण करते है इसका चित्रण किया है ।

3.1.2 अंगारा –कुसुम मेघवाल

कुसुम मेघवाल की 'अंगारा' एक ऐसी कहानी है जो दलितो का जीवन तथा स्त्री शोषण की कहानी है । मेघवालजी ने प्रस्तुत कहानी अछूत गरीब के इज्जत को केंद्रबिंदू मानकर लिखी हुयी कहानी है। कहानी की शुरुवात हरखू चमार के घर में भीड से हाती है। बेबस मॉ बाप अपनी सत्रह साल की बेटी जमना की लुटी इज्जत पर ऑसू बहा रहे थे। जमुना जैसे ही घर पहुँची लोगों की भीड और मुँहसे निकलें बातों की बाणा से वह और अधिक अंदर से टुट गयी। "छिनाल कैसी कुंदती फिरती थी अपनी जवानी बताने को पता नहीं किन–किन के साथ मुँह काला करते आई है।"(दलित कहानी संचयन, संपा. रमणिका गुप्ता, साहित्य अकदमी, प्रथम संस्करण 2003, प142) जमुना के पास इन बातों को झेलने के सिवा कोई चारा नहीं था। वह बेहद उदास, अपमानित, टुटी हुई पीडित थी। उसका दर्द समझनेवाला तथा सुननेवाला कोई नहीं था । जमुना का छोटा भाई केशु सब कुछ देख रहा था। लेकिन उसे कुछ समझ में नही आ रहा था। उसे केवल इतना मालुम था कि, तीन दिन पहले उसके जीजी खेतपर से अचानक गायब हो गई थी इसीलिए घरवाले परेशान थे । जीजी कुछ बोल नहीं रही थी चुपचाप रो रही है, मॉ भी रो रही है, बापू भी रो रहे है, । यह सब कुछ केशु के समझ के बाहर था । इसीलिए वह दौडता हुआ खेतपर अपने बडे भाई हीरा के पास जाकर घर की स्थिती बता देता है हीरा जैसे ही घर पर भीड तथा अपनी बहन की दुर्दशा देख कोधाग्नी से उसका जवान खून खौल उठता है। वह भीड को

चीरता हुआ अपनी बहन जमुना के पास जाता है । तथा उसे अपने गले लगा लेता है । जमुना सिसक सिसककर रोने लगी भाई का बहन के प्रति सहानुभूति देख भीड चूपचार खिसक गई हीरा बहन की इज्जत लुटनेवालो से बदला लेकर रहेगा ऐसी कसम खाता है । हीरा अपनी बहन को शांत करते हुए उसकी हिम्मत बॉध ली तथा उसे बिना डरे सब कुछ निसंकोच सही सही बता देने को कहता है । जमुना अपने भाई से बताती है कि, "जब में नाले के पासवाले खेत की भेड पर घास काट रही थी, ठाकुर का बडा लडका सुमेरसिंह और उसका चाचा नत्थूसिंह चुपके से आए मैं चिल्लायी उसके पहले ही दोनो ने मुझे पकडकर मेरे मुँह मे कपडा ठूस दिया और चाकू की नोक पर मुझे बहुत दूर सुनसान जग पर ले गए और दोनो ने मेरे से मुह काला किया। इतने दिन उसी वीरान कोठरी में मुझे बन्द रखा। वे दोनो समय मेरे सामने रुखी सुखी रोटी डालते और मेरी दुर्गत करते।"(दलित कहानी संचयन, संपा. रमणिका गुप्ता, साहित्य अकदमी, प्रथम संस्करण 2003, प143)

जमुना उनसे बिनती करते हुए समझाती है कि, आप लोगो को तो हमारी परछाई से भी परहेज है, हमे छुते ही आप अपवित्र हो जाते है किंतु रात के अंधरे में हमारा पसीना और होठों से भी आप अपवित्र नहीं होते। ऐसे लिपट जाते है जैसे आप और हम में कोई फर्क नही है तो आपकी छूत–छात और जातपात कहॉ चली गइ। तब ठाकूर सुमरे सिंह उसे धिक्कारते हुए कहता है,"जबान चलाती है हरामजादी!तुझे पता नहीं, अब तू हमारे चंगूल से बचकर जा भी नहीं सकती कहीं हमारा जब तक जी चाहेगा तब तक तेरा भोग करेंगे और जब जी भर जाएगा मारकर यही जंगल में फेंक देंग, चील–कौर खा जाएगा ।"

10 (दलित कहानी संचयन, संपा.रमणिका गुप्ता, साहित्य अकदमी, प्रथम संस्करण 2003, प.143)कल रात सुमेरसिंह तथा उसके चाचा इतने नशे में थे की उन्हे कोई सुंध नहीं थी । इसी का फायदा लेकर जमुना रात के अंधेरे में कोठरी से भाग निकली जंगल से छुपते छिपाते अपनी जान बचाते हुए अपने घर आ पहुँची है । भाई हिरा प्रतिशोध की आग में जल रहा है । वह उसका बदला लेने की कसम खाता है । वह कहता है अछूत गरीबों की भी इज्जत होती है और वह भी इज्जत से जीना जानते है । हीरा जमुना से पुरी जानकारी लेने के बाद ठाकुरों के खिलाफ रपट लिखवाने निकट के थाने में चला जाता है । लेकिन थानेदार रपट लिखवाने के पॉच सौ रुपये मॉगता है । हीरा के पास पैसे कहॉ से आते इसिलीए वह घर जाकर अपनी मॉ की हंसली गले में पहनने का चांदी के जेवर गिरवी रखकर पैसे ले आया और थानेदार को दिए लेकिन उसका कुछ भी फायदा नहीं हुआ । क्योंकि सुमेरसिंह ने थानेदार को भारी रक्कम रिश्वत देकर मामला रफादफा कर दिया ।हीरा जब भी थानेदार से पुछता तो वह कहता, "तुम्हारे कोई गवाह है ? उनको बुला लाओ" कहकर टाल देता। सुमेरसिंह ठाकूर के खिलाफ कौन गवाही देगा।क्योंकि सुमेरसिंह ठाकुमर का रिश्तेदार मंत्री था जो इन्हे संरक्षण दे रहा था । इसीलिए सुमेरसिंह गुन्हगार होकर भी उसका हौसला और अधिक बढ गया तथा वह अपने साथियों सहित चमार की बस्ती में जाकर उन्हे धमकी देने लगा। "अभी क्या हुआ है ? अभी तो एक को उठाकर ले गए है, सभी कलियों की बारी आएगी, घबराना मत अभी बहुत कुछ बाकी है ।किसी ने हमारे विरुध्द गवाही दी या जबान खोली तो ये बन्दुक देख लो, भूनकर रख देंगे झोपडियों में आग लगा देंगे तुम्हारी एक भी और नही बचेगी इसीलिए खैर इसीमें है कि, चुपचाप हम जो कहे वो करते जाओ हमारे काम में दखल मत दो समझे।"(दलित कहानी संचयन, संपा.रमणिका गुप्ता, साहित्य अकदमी, प्रथम संस्करण 2003, प144)

सामाजिक व्यवस्था तथा जातीय व्यवस्था में सदियों से दबे चमार कुछ नहीं बोले । कुछ बुजुर्ग तो हाथ जोडकर उनके सामने आ गए और गिडगिडाने लगे, "कुछ नहीं बोलेंगे हुजुर, आप तो हमारे अन्नदाता हो । जलमे रहकर मगर से बैर कैसे हो सकता है।"तो दुसरी और कुछ नौजवान खडे थे उनका खून खौल रहा था। लेकिन बुजुर्गो के आगे वह चुपचाप खडे थे इधर हीरा अपनी झोपडीं में टुटी खटियापर बेठा सुमेरसिंह की धमकियॉ सुनकर उसका खून खौल गया था । वह बदला लेने की ताक में ही था जो मौत को गले लगा ले वह किसी से नहीं डरता हीरा अपनी बहन के साथ सुमेरसिंह को सजा

Issue XIX (19) , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
November 2019 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

देने की बात करता है, "बहिना ये सरकार और थानेदार इन बलात्कारियों को सजा नहीं दे सकते ये सब जो नपुंसक हो गए है । तु खडी हो जा और मेरा साथ दे उन्हे सजा हमें ही देनी पडेगी जिसकी बहन, बेटी पर गुरजती है, उसे ही पता लगता है ।"12(दलित कहानी संचयन, संपा.रमणिका गुप्ता, साहित्य अकदमी, प्रथम संस्करण 2003, प145)सुमेरसिंह दहाडता हुआ हीरा की झोपडी तक पहुँच गया हीरा भी अपने हाथ मे फरसा लिए अंगारा बने अपनी झोपडी से बाहर निकला हीरा सुमेरसिंह से ललकारते हुए कहता है, हम तुम्हारी इज्जत करत है इसका मतलब यह नही की हमारी बहन बेटियों की इज्जत से तुम्हे खेलने दे हीरा की यह बात सुनकर सुमेरसिंह कोध से कॉपने लगा, "एक चमरे की यह हिम्मत, ठहर तुझो अभी बताता हूँ कि इससे जबान लडाने का अंजाम क्या होता है । "13 (दलित कहानी संचयन, संपा.रमणिका गुप्ता, साहित्य अकदमी, प्रथम संस्करण 2003, प145) सुमेरसिंह हीरा पर बंदुक चलाने ही वाला था की हीरा उसपर चीते सा फरसा लेकर कुद पडा । दोनो एक दुसरे पर निहत्था कुद पडे । हीरा सुमेरसिंह से भारी पड रहा था । हीरा का साहस देखकर अन्य युवक भी लठठ मैदान में उतर गए । इतना ही नही तो औरते भी पिछे नहीं रही । सुमेरसिंह लडते लडते थक गया । उसका चाचा उमडी भीड को देखकर वहॉ से चुपचाप भाग निकला । जमना ऑखे फाडे अपनी इज्जत लुटनेवाले नर पिशाच को देख रही थी । अंगारा बनी जमना दौडी दौडी घर में गई और दराती उठाकर लाई, सरकार और पुलिस जिसे सजा नहीं दे पाई उसे जमना ने दे दी । उसने सुमेरसिंह के पुरुषत्व के प्रतिक अंग को काटा डाला । सुमेरसिंह तडप रहा था । उसका बचना मुश्किल था । और यदि वह बच भी जाता तो उसकी जिंदगी एक हिजडे की जिंदगी बन जाती । सुमेरसिंह अब किसी अछूत गरीब लडकीं की इज्जत से नहीं खेल पाएगा ।

संदर्भ :

1. अंतिम दश की लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी – डॉ.रामचंद्र माली, पृष्ठ क.10
2. वही पृष्ठ क.14–15
3. द्रोणाचार्य एक नही, कावेरी, पृष्ठ क.4
4. वही पृष्ठ क.5
5. वही पृष्ठ क.5
6. वही पृष्ठ क.5
7. वही पृष्ठ क.6
8. दलित कहानी संचयन संपा.रमणिका गुप्ता, साहित्य अकदमी, प्रथम संस्करण 2003, प.142
9. वही पृष्ठ क.143
10. वही पृष्ठ क.143
11. वही पृष्ठ क.144
12. वही पृष्ठ क.145
13. वही पृष्ठ क.145